

## आज़ाद हृदय फौज की वरिसत

### प्रलम्बिस के लयि:

[आज़ाद हृदय फौज \(INA\)](#), [नेताजी सुभाष चंदर बोस](#), [करतवय पथ](#), [भारतीय स्वतंत्रता लीग](#), [स्वतंत्र भारत की अनंतमि सरकार](#), रॉयल इंडियन नेवी वदिरोह, INA पर अभयिग

### मेन्स के लयि:

आज़ाद हृदय फौज की भूमिका और वरिसत

[स्रोत: द हृदय](#)

## चर्चा में क्यो?

[आज़ाद हृदय फौज \(INA\)](#) के एक सेवानवृत्त सैनिक ने [करतवय पथ](#) पर स्थति [नेताजी सुभाष चंदर बोस](#) की प्रतमि पर मालयारपण कर अपना 99वाँ जन्मदिन मनाया ।

- ये 17 वर्ष की आयु में 1 नवंबर 1943 को INA में शामिल हुए थे ।

## आज़ाद हृदय फौज (INA) क्या थी?

- **परचिय:** यह [द्वितीय विश्व युद्ध](#) के दौरान भारत में ब्रिटिश शासन का सामना करने के उद्देश्य से गठति एकसैन्य बल था और इसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका नभाई थी ।
- **गठन:**
  - **मोहन सहि:** उन्होंने भारतीय युद्धबंदियों (POW) से एक सेना गठति करने का प्रस्ताव कया और जापानी समर्थन प्राप्त कया । उन्होंने शुरुआत में INA का नेतृत्व कया, जसिमें लगभग 40,000 सैनिकों की भरती की गई ।
    - हालाँकि, सैनिकों की संख्या को लेकर जापानियों के साथ संघर्ष के कारण उन्हें हटा दिया गया ।
  - **रासबहारी बोस:** यह एक अनुभवी क्रांतिकारी थे और इन्होंने INA के लयि समर्थन जुटाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका नभाई और टोक्यो में [भारतीय स्वतंत्रता लीग](#) का गठन कया (1942) ।
  - **सुभाष चंदर बोस:** 25 अगस्त 1943 को बोस को INA का सुप्रीम कमांडर नयिक्त कया गया और बाद में 21 अक्टूबर 1943 को उन्होंने सगिपुर में [स्वतंत्र भारत की अनंतमि सरकार](#) अथवा [आज़ाद हृदय](#) की स्थापना की ।
    - इसे जापान, जर्मनी, इटली और चीन (वांग जगिवेई के नेतृत्व में) सहति 9 देशों द्वारा मान्यता दी गई ।
    - चलो दलिली अभियान के तहत INA ने मणपुर के मोइरांग में भारतीय धरती पर अपना झंडा फहराया, लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की हार के कारण यह अभियान इम्फाल में समाप्त हो गया ।
- **पतन: जापान की हार (1944-45)** से INA कमज़ोर हो गई । 15 अगस्त 1945 को जापान के आत्मसमर्पण के बाद INA ने भी आत्मसमर्पण कर दिया ।
  - 18 अगस्त 1945 को, कथति तौर पर ताइवान वमिन दुर्घटना में सुभाष बोस की मृत्यु हो गई, जसिके कारण INA को भंग कर दिया गया ।
- **INA पर अभयिग:** INA की हार के बाद, अनेक INA सैनिकों को युद्धबंदियों के रूप में कोर्ट मार्शल कया गया, जसिसे देशव्यापी वरिोध प्रदर्शन शुरु हो गया, जसिने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को बढ़ावा दिया ।
  - नवंबर 1945 में लाल कलि में हुए पहले मुकदमे में तीन अधिकारी प्रेम कुमार सहगल (एक हृदय), शाह नवाज खान (एक मुसलमि) और गुरबखश सहि दलिलों (एक सखि) शामिल थे, जिन्होंने INA की एकता पर जोर दिया ।
  - बॉम्बे कॉन्ग्रेस अधविशन (सतिंबर 1945) में INA युद्धबंदियों के समर्थन में एक प्रस्ताव पारति कया गया । प्रख्यात वकीलभूलाभाई देसाई, तेज बहादुर सपट्ट, जवाहरलाल नेहरू और आसफ अली ने उनका प्रतविद कया ।
- **प्रमुख राष्ट्रवादी प्रदर्शन (1945-46):** इस अवर्धा के दौरान तीन प्रमुख हसिक वरिोध प्रदर्शन हुए:
  - 21 नवंबर 1945: INA मुकदमों के खलिफ कलकत्ता में छात्र वरिोध प्रदर्शन के कारण पुलसि गोलीबारी हुई ।
  - 11 फरवरी 1946: INA अधिकारी राशदि अली की सजा के वरिोध में कलकत्ता में प्रदर्शन शुरु हो गये ।

- 18 फरवरी 1946: रॉयल इंडियन नेवी (RIN) के सैनिकों ने बॉम्बे में वद्रोह कर दिया।

## और पढ़ें:

- सुभाष चंद्र बोस के बारे में मुख्य तथ्य क्या हैं?
- भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में SC बोस की भूमिका क्या थी?

# नेताजी सुभाष चंद्र बोस

## जन्म

- 23 जनवरी, 1897 ('पराक्रम दिवस' के रूप में मनाया जाता है)

आपदा प्रबंधन में भारत में व्यक्तियों/संगठनों द्वारा प्रदान की गई निस्वार्थ सेवा सम्मानित करने हेतु हर साल 23 जनवरी को सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार की घोषणा की जाती है।



## आरंभिक जीवन

- इंडियन सिविल सर्विसेज (ICS) परीक्षा उत्तीर्ण की (1919) लेकिन बाद में त्याग-पत्र दे दिया
- स्वामी विवेकानन्द को अपना आध्यात्मिक गुरु मानते थे
- समाचार पत्र- स्वराज

## कॉंग्रेस (INC) में राजनीतिक जीवन

- विना शर्त स्वराज (Unqualified Swaraj) अर्थात् स्व-शासन का समर्थन किया
- वर्ष 1930 के नमक सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के निलंबन तथा गांधी-इरविन समझौते (वर्ष 1931) पर हस्ताक्षर करने का विरोध किया
- हरिपुरा (1938) और त्रिपुरी (1939) में कॉंग्रेस के अध्यक्ष का चुनाव जीता
- गांधी जी से वैचारिक मतभेद के कारण कॉंग्रेस से इस्तीफा दिया (1939)
- राजनीतिक वामपंथ को मज़बूत बनाने हेतु एक नई पार्टी 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना

## आज़ाद हिन्द फौज़/इंडियन नेशनल आर्मी (INA)

- जुलाई 1943 में जर्मनी से जापान-नियंत्रित सिंगापुर पहुँचे वहाँ से उन्होंने अपना प्रसिद्ध नारा 'दिल्ली चलो' जारी किया

उन्होंने 'जय हिन्द' का नारा भी दिया

- अक्टूबर 1943 में आज़ाद हिंद सरकार और INA के गठन की घोषणा की
- INA ने इंडोनेशिया (भारत) और बर्मा में मित्र देशों की सेनाओं का मुकाबला किया (1944)

इंडियन नेशनल आर्मी का गठन पहली बार मोहन सिंह और जापानी मेजर इयिची फुजिवारा के नेतृत्व में किया गया था तथा इसमें मलय (वर्तमान मलेशिया) अभियान के दौरान सिंगापुर में जापान द्वारा कब्दे किये गए ब्रिटिश-भारतीय सेना के युद्ध बंदियों को शामिल किया गया था।

## मृत्यु

- ऐसा माना जाता है कि वर्ष 1945 में उस समय उनका निधन हो गया जब उनका विमान ताइवान में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था।



Drishti IAS

## आज़ाद हिंद फौज (INA) का महत्त्व क्या है?

- ब्रिटिश सत्ता को प्रत्यक्ष चुनौती: INA के गठन और सैन्य अभियानों ने धुरी शक्तियों (जापान और जर्मनी) की मदद से भारत को सैन्य रूप से स्वतंत्र कराने का प्रयास करके ब्रिटिश शासन को प्रत्यक्ष चुनौती दी।
- राष्ट्रवादी एकता: INA मुकदमों ने धार्मिक और राजनीतिक विभाजनों से ऊपर उठकर भारतीयों को एकजुट किया, जिससे देशव्यापी वरिध प्रदर्शन शुरू हो गया।

- कॉंग्रेस, मुस्लिम लीग, हिंदू महासभा और कम्युनिस्ट जैसे राजनीतिक दल ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ एकजुट थे।
- भारतीय सशस्त्र बलों पर प्रभाव: INA ने भारतीय सैनिकों के बीच सहानुभूति को प्रेरित किया, जिसके परिणामस्वरूप रायल इंडियन नेवी विद्रोह (वर्ष 1946) हुआ, जहाँ 20,000 नाविकों ने विद्रोह किया, जो ब्रिटिश नियंत्रण में एक महत्वपूर्ण मोड़ था।
- ब्रिटिशों की वापसी: वर्ष 1956 में, ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने स्वीकार किया कि INA ब्रिटेन के बाहर निकलने की कुंजी थी, क्योंकि भारतीय सेना के अब ब्रिटिश ताज के प्रतिविपादार नहीं होने के डर से स्वतंत्रता में तेज़ी आई।
- वरिष्ठ और प्रतीकात्मकता: INA सशस्त्र प्रतिरोध का प्रतीक बन गया, जिसने भारत की रक्षा और रणनीतिक दृष्टिकोण में भावी पीढ़ियों को प्रेरित किया।
  - INA का नारा "जय हिंद" राष्ट्रीय एकता का नारा बना हुआ है।

और पढ़ें: [रास बहारी बोस के बारे में मुख्य तथ्य क्या हैं?](#)

## नषिकर्ष

- आज़ाद हिंद फौज (INA) ने ब्रिटिश शासन को प्रत्यक्ष चुनौती देकर, राष्ट्रवादी एकता को बढ़ावा देकर और सशस्त्र बलों के विद्रोह को प्रेरित करके भारत की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके प्रभाव ने ब्रिटिश वापसी को तेज़ कर दिया और इसकी वरिष्ठ भारत के रणनीतिक दृष्टिकोण, सैन्य लोकाचार और राष्ट्रीय पहचान को प्रभावित करती रही है।

दृष्टिभेन्स प्रश्न:

प्रश्न: भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में आज़ाद हिंद फौज (INA) की भूमिका पर चर्चा कीजिये।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, पछिले वर्ष के प्रश्न

?????????:

प्रश्न. औपनिवेशिक भारत के संदर्भ में शाह नवाज खान, प्रेम कुमार सहगल और गुरबख्श सहि ढलिलों कसि रूप में याद कयि जाते हैं? (2021)

- स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन के नेता के रूप में
- 1946 में अंतरिम सरकार के सदस्यों के रूप में
- संवधान सभा में प्रारूप समिति के सदस्यों के रूप में
- आज़ाद हिंद फौज (इंडियन नेशनल आर्मी) के अधिकारियों के रूप में

उत्तर: (d)

प्रश्न . भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान नमिनलखिति में से कसिने 'फ्री इंडियन लीजन' नामक सेना स्थापति की थी? (2008)

- लाला हरदयाल
- रासबहारी बोस
- सुभाष चंद्र बोस
- वी.डी. सावरकर

उत्तर: (c)

?????????

प्रश्न: गांधीवादी प्रावस्था के दौरान वभिन्न स्वरो ने राष्ट्रवादी आंदोलन को सुदृढ़ एवं समृद्ध बनाया था। वसितारपूर्वक स्पष्ट कीजिये। (2019)

प्रश्न: स्वतंत्रता के लयि संघर्ष में सुभाषचंद्र बोस एवं महात्मा गांधी के मध्य दृष्टिकोण की भन्नताओं पर प्रकाश डालिये। (2016)

प्रश्न: महात्मा गांधी के बनिा भारत की स्वतंत्रता की उपलब्धकितिनी भन्नि हुई होती? चर्चा कीजिये। (2015)

प्रश्न: कनि प्रकारों से नौसैनिक विद्रोह भारत में अंगरेज़ों की औपनिवेशिक महत्वाकांक्षाओं की शव-पेटिका में लगी अंतिम कील साबति हुआ था? (2014)

